

Signature and Name of Invigilator

1. (Signature) _____

(Name) _____

2. (Signature) _____

(Name) _____

Roll No.

--	--	--	--	--	--

(In figures as per admission card)

Roll No. _____

(In words)

J 6 2 1 0**Test Booklet No.**

Time : 2 1/2 hours]

PAPER-III

[Maximum Marks : 200

COMPARATIVE STUDY OF RELIGIONS

Number of Pages in this Booklet : 24

Number of Questions in this Booklet : 26

Instructions for the Candidates

- Write your roll number in the space provided on the top of this page.
- Answer to short answer/essay type questions are to be given in the space provided below each question or after the questions in the Test Booklet itself.

No Additional Sheets are to be used.

- At the commencement of examination, the question booklet will be given to you. In the first 5 minutes, you are requested to open the booklet and compulsorily examine it as below :

(i) To have access to the Question Booklet, tear off the paper seal on the edge of this cover page. Do not accept a booklet without sticker-seal and do not accept an open booklet.

(ii) **Tally the number of pages and number of questions in the booklet with the information printed on the cover page. Faulty booklets due to pages/questions missing or duplicate or not in serial order or any other discrepancy should be got replaced immediately by a correct booklet from the invigilator within the period of 5 minutes. Afterwards, neither the Question Booklet will be replaced nor any extra time will be given.**

- Read instructions given inside carefully.
- One page is attached for Rough Work at the end of the booklet before the Evaluation Sheet.
- If you write your name or put any mark on any part of the Answer Sheet, except for the space allotted for the relevant entries, which may disclose your identity, you will render yourself liable to disqualification.
- You have to return the test booklet to the invigilators at the end of the examination compulsorily and must not carry it with you outside the Examination Hall.
- Use only Blue/Black Ball point pen.
- Use of any calculator or log table etc., is prohibited.

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

- पहले पृष्ठ के ऊपर नियत स्थान पर अपना रोल नम्बर लिखिए ।
- लघु प्रश्न तथा निबंध प्रकार के प्रश्नों के उत्तर, प्रत्येक प्रश्न के नीचे या प्रश्नों के बाद में दिये हुए रिक्त स्थान पर ही लिखिये ।

इसके लिए कोई अतिरिक्त कागज का उपयोग नहीं करना है ।

- परीक्षा प्रारम्भ होने पर, प्रश्न-पुस्तिका आपको दे दी जायेगी । पहले पाँच मिनट आपको प्रश्न-पुस्तिका खोलने तथा उसकी निम्नलिखित जाँच के लिए दिये जायेंगे जिसकी जाँच आपको अवश्य करनी है :

(i) प्रश्न-पुस्तिका खोलने के लिए उसके कवर पेज पर लगी कागज की सील को फाड़ लें । खुली हुई या बिना स्टीकर-सील की पुस्तिका स्वीकार न करें ।

(ii) **कवर पृष्ठ पर छपे निर्देशानुसार प्रश्न-पुस्तिका के पृष्ठ तथा प्रश्नों की संख्या को अच्छी तरह चैक कर लें कि ये पूरे हैं । दोषपूर्ण पुस्तिका जिनमें पृष्ठ/प्रश्न कम हों या दुबारा आ गये हों या सीरियल में न हों अर्थात् किसी भी प्रकार की त्रुटिपूर्ण पुस्तिका स्वीकार न करें तथा उसी समय उसे लौटाकर उसके स्थान पर दूसरी सही प्रश्न-पुस्तिका ले लें । इसके लिए आपको पाँच मिनट दिये जायेंगे । उसके बाद न तो आपकी प्रश्न-पुस्तिका वापस ली जायेगी और न ही आपको अतिरिक्त समय दिया जायेगा ।**

- अन्दर दिये गये निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें ।
- उत्तर-पुस्तिका के अन्त में कच्चा काम (Rough Work) करने के लिए मूल्यांकन शीट से पहले एक पृष्ठ दिया हुआ है ।
- यदि आप उत्तर-पुस्तिका पर अपना नाम या ऐसा कोई भी निशान जिससे आपकी पहचान हो सके, किसी भी भाग पर दर्शाते या अंकित करते हैं तो परीक्षा के लिये अयोग्य घोषित कर दिये जायेंगे ।
- आपको परीक्षा समाप्त होने पर उत्तर-पुस्तिका निरीक्षक महोदय को लौटाना आवश्यक है और इसे परीक्षा समाप्ति के बाद अपने साथ परीक्षा भवन से बाहर न लेकर जायें ।
- केवल नीले/काले बाल प्वाइंट पेन का ही इस्तेमाल करें ।
- किसी भी प्रकार का संगणक (कैलकुलेटर) या लाग टेबल आदि का प्रयोग वर्जित है ।

J-6210**P.T.O.**

COMPARATIVE STUDY OF RELIGIONS

धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन

PAPER – III

प्रश्नपत्र – III

Note : This paper is of **two hundred (200)** marks containing **four (4)** sections. Candidates are required to attempt the questions contained in these sections according to the detailed instructions given therein.

नोट : यह प्रश्नपत्र **दो सौ (200)** अंकों का है एवं इसमें **चार (4)** खंड हैं । अभ्यर्थियों को इनमें समाहित प्रश्नों के उत्तर अलग से दिये गये विस्तृत निर्देशों के अनुसार देना है ।

SECTION – I

खंड – I

Note : This section consists of **two** essay type questions of **twenty (20)** marks each, to be answered in about **five hundred (500)** words each. **(2 × 20 = 40 marks)**

नोट : इस खण्ड में **बीस-बीस** अंकों के **दो** निबन्धात्मक प्रश्न हैं । प्रत्येक का उत्तर लगभग **पाँच सौ (500)** शब्दों में अपेक्षित है । **(2 × 20 = 40 अंक)**

1. Write an essay on basic doctrines of Hinduism.

हिन्दू धर्म के मूलभूत सिद्धान्तों पर एक निबन्ध लिखिए ।

OR / अथवा

Write an essay on the doctrine of Syadvada according to Jainism.

जैनदर्शन के अनुसार स्याद्वाद सिद्धान्त पर एक निबन्ध लिखिए ।

OR / अथवा

Discuss the problem of liberation in early Buddhism.

प्रारंभिक बौद्ध धर्म में मुक्ति की समस्या का विवेचन कीजिए ।

OR / अथवा

Write an essay on feminist theology.

नारीत्व ईश्वरमीमांसा (फेमिनिस्ट थियोलजी) के बारे में एक निबन्ध लिखिए ।

OR / अथवा

Write an essay on the basic teachings of Islam.

इस्लाम की मौलिक शिक्षाओं पर एक निबन्ध लिखिए ।

OR / अथवा

Discuss the relevance of Guru Nanak's message in the modern times.

आधुनिक युग में गुरु नानक के संदेश की प्रासंगिकता के ऊपर प्रकाश डालिए ।

2. Sixteen sacraments are solemnised in the Vedic culture. Discuss.

वैदिक संस्कृति में षोडश संस्कार सम्पादित किए जाते हैं, उल्लेख कीजिए ।

OR / अथवा

Discuss in detail the contribution of Jainism to Indian culture.

भारतीय संस्कृति के लिए जैन धर्म के योगदान पर विस्तार से प्रकाश डालिए ।

OR / अथवा

Write an essay on the Revival of Buddhism in India in the 20th Century.

भारत में 20वीं सदी ईसवी में बौद्ध धर्म के पुनरुत्थान पर एक निबन्ध लिखिए ।

OR / अथवा

Write an essay on the Ten Commandments of God.

ईश्वर के दस नियमों के बारे में एक निबन्ध लिखिए ।

OR / अथवा

Assess the contribution of Sir Syed Ahmad Khan as an educational reformer.

शैक्षिक सुधारक के रूप में सर सैयद अहमद खान के योगदान का मूल्यांकन कीजिए ।

OR / अथवा

Discuss the role of Sri Guru Granth Sahib in the formation of Sikh culture.

सिक्ख संस्कृति की सृजना में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की भूमिका की विवेचना कीजिए ।

SECTION – II

खंड – II

Note : This section contains **three (3)** questions from each of the electives/specializations. The candidate has to choose only one elective/specialization and answer all the three questions from it. Each question carries **fifteen (15)** marks and is to be answered in about **three hundred (300)** words. **(3 × 15 = 45 marks)**

नोट : इस खंड में प्रत्येक ऐच्छिक इकाई / विशेषज्ञता से **तीन (3)** प्रश्न हैं । अभ्यर्थी को केवल एक ऐच्छिक इकाई / विशेषज्ञता को चुनकर उसी के तीनों प्रश्नों का उत्तर देना है । प्रत्येक प्रश्न **पन्द्रह (15)** अंकों का है व उसका उत्तर लगभग **तीन सौ (300)** शब्दों में अपेक्षित है । **(3 × 15 = 45 अंक)**

Elective – I

ऐच्छिक – I

Hinduism

हिन्दू धर्म

3. Introduce the philosophical themes of Āchārya Shankar.
आचार्य शंकर के दार्शनिक विचारों से परिचित कराइये ।
4. Discuss the role of Raja Ram Mohan Rai in abolishing the Sati Prathā.
सती प्रथा के उन्मूलन हेतु राजा राममोहन राय की भूमिका की विवेचना कीजिए ।
5. Explain the basic difference between Śaivism and Vaiṣṇavism.
शैव मत एवं वैष्णव मत के मूलभूत अन्तर की व्याख्या कीजिए ।

OR / अथवा

Elective – II

ऐच्छिक – II

Jainism

जैन धर्म

3. Discuss the salient features of Jain-Philosophy.
जैनदर्शन के प्रमुख तत्त्वों का विवेचन कीजिए ।
4. Throw light in detail on the social aspects of Jainism.
जैन धर्म के सामाजिक पक्ष पर विस्तार से प्रकाश डालिए ।
5. Discuss the place of women during the period of Lord Mahavira-Swami.
भगवान महावीर स्वामी-कालीन 'नारी का स्थान' पर प्रकाश डालिए ।

OR / अथवा

Elective – III

ऐच्छिक – III

Buddhism

बौद्ध धर्म

3. Discuss the main points in the First Sermon of the Buddha.
बुद्ध के प्रथम उपदेश के मुख्य बिन्दुओं का विवेचन कीजिए ।
4. What is the doctrine of TILAKKHAṆA ? Discuss.
तिलकखण का सिद्धान्त क्या है ? विवेचन कीजिए ।
5. What are the main points of divergence between the Hīnayāna and Mahāyāna ? Discuss.
हीनयान और महायान किन बिन्दुओं पर एक दूसरे से भिन्न हैं ? विवेचन कीजिए ।

OR / अथवा

Elective – IV

ऐच्छिक – IV

Christianity

ईसाई धर्म

3. The main articles of the faith found in the creed of Christianity. Discuss.
ईसाई धर्म के विश्वास-रहस्य में पाये गये प्रमुख बिन्दुओं पर व्याख्या कीजिए ।
4. Explain the idea of sin and salvation in Christianity.
ईसाई धर्म में पाये गये पाप और रक्षा के विचारों के बारे में स्पष्टीकरण दीजिए ।
5. Illustrate any two parables of Jesus found in the Gospels.
सुसमाचारों में वर्णित किसी दो दृष्टान्त कथाओं का विवरण कीजिए ।

OR / अथवा

Elective – V

ऐच्छिक – V

Islam

इस्लाम धर्म

3. Discuss the salient features of the Prophet Muhammad as an administrator.
पैगम्बर मुहम्मद के प्रशासन के मुख्य बिन्दुओं का विवेचन कीजिए ।
4. Write a note on the main achievements of Caliph Abu Bakr.
खलीफा अबूबक्र की उत्कृष्ट उपलब्धियों पर एक नोट लिखिए ।
5. Describe the early development of Sufism.
सूफीमत के आरम्भिक विकास का वर्णन कीजिए ।

OR / अथवा

Elective – VI

ऐच्छिक – VI

Sikhism

सिख धर्म

3. Examine the role of the institution of Guruship in Sikhism.
सिख धर्म में गुरुता की संस्था की भूमिका का विवेचन कीजिए ।
4. Explain the idea of Miri-Piri in Sikhism.
सिख धर्म में मीरी-पीरी के विचार की व्याख्या कीजिए ।
5. Find out the origin and role of Singh Sabha Movement in Sikhism.
सिख धर्म में सिंह सभा लहर के उद्भव एवं भूमिका की विवेचना कीजिए ।

SECTION - III
खंड - III

Note : This section contains **nine (9)** questions of **ten (10)** marks, each to be answered in about **fifty (50)** words. **(9 × 10 = 90 marks)**

नोट : इस खंड में **दस-दस (10-10)** अंकों के **नौ (9)** प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **पचास (50)** शब्दों में अपेक्षित है । **(9 × 10 = 90 अंक)**

6. Explain the theme of following verse :
Karmaṇevādhikāraṣṭe mā phaleṣu kadācana.
Mā karmaphalaheturbhū mā te sangostvakarmaṇi.
निम्न श्लोक की विचारधारा की व्याख्या कीजिए :
कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भू मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि ॥

7. Write a note on the Jain-picture Art.
जैन चित्रकला पर एक टिप्पणी लिखिए ।

8. Discuss King Kanishka's role in spread of Buddhism.
बौद्ध धर्म के विस्तार में सम्राट कनिष्क की भूमिका का विवेचन कीजिए ।

9. Explain the prayer of “Our Father” taught by Jesus.
ईसा के द्वारा शिक्षित प्रार्थना “हे पिता हमारे” की व्याख्या कीजिए ।

10. Write a note on the sermon delivered by the Prophet Muhammad on the occasion of the Farewell Pilgrimage.
पैगम्बर मुहम्मद के खुत्बा हिज्जतुल विदा पर एक नोट लिखिए ।

11. Comment upon the editorial scheme of Guru Granth Sahib.
गुरु ग्रंथ साहिब की सम्पादकीय विधि के ऊपर टिप्पणी कीजिए ।

-
-
-
-
-
-
-
-
-
-
-
12. Discuss some basic concepts that are common to most of the Tribal Religions.
आदिवासी धर्मों में सामान्य रूप से पायी गई कुछ बुनियादी अवधारणाओं पर विचार कीजिए ।

-
-
-
-
-
-
-
-
-
-
-
13. What do you know about the major scriptures of the world ? Write at least about two scriptures of the world religions.
विश्व के प्रमुख धर्मग्रन्थों के सम्बन्ध में आप क्या जानते हैं ? कम से कम दो धर्मों के ग्रन्थों पर लिखिए ।

14. Write briefly about some of the theories of Karma as found in Indian religious traditions.

भारतीय धार्मिक परम्पराओं में पाये गये कुछ कर्मसिद्धान्तों पर संक्षेप में लिखिए ।

SECTION – IV

खंड – IV

This section contains **five (5)** questions of **five (5)** marks, each based on the following passage. Each question should be answered in about **thirty (30) words**. **(5 × 5 = 25 marks)**

इस खंड में निम्नलिखित परिच्छेद पर आधारित **पाँच (5)** प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **तीस (30)** शब्दों में अपेक्षित है । प्रत्येक प्रश्न **पाँच (5)** अंकों का है । **(5 × 5 = 25 अंक)**

There have been many inspired leaders in the history of religion. Some have contended themselves with casting their revelations, in traditional forms, with renewing, revitalizing and reforming faith and worship by a change in emphasis or by the introduction of novelties in thought, practice or social organization. These persons are variously called Prophets, Reformers, Masters and Teachers and appear with varying frequency among different peoples, nations and religions. Our concern here is with the great founded religions with those from which sprang a profound, fresh, new religious experience : Christianity, Buddhism, Jainism, Zoroastrianism, Islam, Manichaeism, Confucianism and Taoism. In spite of the smaller number of their adherents, Sikhism, Babism and similar religions can also be counted in this group, inasmuch as they are more than reform movements.

In approaching social phenomena as complex as the great founded religions, we had best begin with a review of the genesis of these new communities. In so doing, we must attempt to interpret their development, at least in the early phases, as the interaction between experience and the ideas projected upon it. Ideals of fellowship and communion result from the central experience of its founder and are concretized in the structure and organization of the group. The attitudes of the various groups gathered about the central figure of the founder necessarily vary, but there are interesting parallels in the growth and formations of the societies infused by the spirit.

धर्मों के इतिहास में अनेक उत्प्रेरित नायक हो चुके हैं, उनमें से कुछ इस बात से सन्तुष्ट दिखलायी पड़ते हैं कि उन्होंने पारम्परिक स्वरूप में अपने इल्हाम या श्रुति-प्रकाश को प्रस्तुत किया है; जिसमें उन्होंने विचारों, आचरण और सामाजिक संगठन में नवीनता लाते हुए अपने धार्मिक विश्वास और आराधना विधि में नयापन लाते गये हैं और चेतना तथा सुधार करते गए हैं। उनको लोग अलग-अलग नामों से पुकारते हैं – पैगम्बर, सुधारक, आचार्य, शास्त्र, गुरु, तीर्थङ्कर आदि। वे अलग-अलग लोगों में, राष्ट्रों में और धर्मों में बार-बार घटती-बढ़ती प्रवृत्ति के साथ प्रकट हुये हैं। यहाँ पर हमारा मन्तव्य उन महान संस्थापित धर्मों से है जैसे कि ईसाई धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, पारसी धर्म, इस्लाम धर्म, मैनेकेइज्म, कन्फ्यूशियन धर्म और ताओ धर्म जिनसे अति उन्नत, तरोताज़ा धार्मिक अनुभव प्रस्फुटित हुए हैं। अनुयायियों की छोटी संख्या के बावजूद सिख धर्म, बहाई धर्म और उन जैसे अन्य धर्मों को भी इस समूह में गिनाया जा सकता है क्योंकि वे सुधारवादी आन्दोलनों से अधिक महत्त्व के हैं।

महान संस्थापित धर्मों पर विचार करते समय जो कि जटिल सामाजिक परिदृश्य के हैं, नये समुदायों के उद्भव पर पुनर्विचार करना उपयोगी होगा। ऐसा करते समय हमें उनके विकास की व्याख्या करने का प्रयास करना चाहिए, कम से कम उनके प्रारम्भिक दौर के विषय में, क्योंकि अनुभव और विचार का परस्पर प्रभाव उन पर पड़ा था। भाईचारा और मेलमिलाप का आदर्श उन संस्थापकों के केन्द्रीय अनुभव के परिणाम के रूप में उद्भूत हुए हैं और उस जमात या समूह के ढाँचें और संगठन में घनीभूत (मूर्तरूप) हो गए हैं। विभिन्न गुटों के लोग अपने संस्थापक के प्रमुख स्वरूप के चारों ओर एकत्रित होते हैं जो अनिवार्य रूप से भिन्न हैं; परन्तु समुदायों की वृद्धि और संगठन में आत्म-प्रेरणा से रोचक समानतायें हैं।

15. Comment upon the role of revelation in the formation of a religion.
धर्म की स्थापना में दैवीय ज्ञान की भूमिका के विषय में बताइये।

16. Discuss the nature of religious leadership in world religions.
विश्व धर्म में धार्मिक नेतृत्व की प्रकृति का विवेचन कीजिए।

17. Explain the role of founders of religion in the organisation of the society.

समाज के संगठन में धर्म संस्थापकों की भूमिका को अभिव्यक्त कीजिए ।

18. Discuss the relationship between the religious ideals and practices.

धार्मिक विचारों एवं अनुपालन के मध्य सम्बन्ध का उल्लेख कीजिए ।

19. Describe the status of central religious figure in a religion.

धर्म में मुख्य धार्मिक व्यक्तित्वों के स्वरूप की विवेचना कीजिए ।

FOR OFFICE USE ONLY	
Marks Obtained	
Question Number	Marks Obtained
1	
2	
3	
4	
5	
6	
7	
8	
9	
10	
11	
12	
13	
14	
15	
16	
17	
18	
19	
20	
21	
22	
23	
24	
25	
26	

Total Marks Obtained (in words)

(in figures)

Signature & Name of the Coordinator

(Evaluation)

Date